

## वैश्विक जोखिम रिपोर्ट 2025

### प्रलिस के लयः

वैश्विक जोखिम रिपोर्ट, वशिव आरथक मंच, व्यापार संरक्षणवाद, वैश्विक मुद्रासफीत, व्यापार युद्ध, गलत सूचना, एलगोरदिम पूरवागरह, नागरिक नगिरानी, संसरशपि, साइबर सुरकषा, जलवायु परविरतन, जैव प्रौद्योगिकी उननत, परयावरणीय जोखिम, सुपर-एजगि सोसायटी, पेंशन संकट, शर्म की कमी, प्रदूषण, जैविक हथयार, जैव आतंकवाद, प्रदूषण नयितरण

### मेन्स के लयः

वैश्विक जोखिम रिपोर्ट, वशिव आरथक मंच, व्यापार संरक्षणवाद और इसका प्रभाव, गलत सूचना और इसका प्रभाव, साइबर सुरकषा के मुद्दे, जैव प्रौद्योगिकी प्रगत से संबंधित मुद्दे

### चर्चा में क्यों?

वशिव आरथक मंच ने वैश्विक जोखिम रिपोर्ट, 2025 का 20वाँ संस्करण जारी किया है, जसमें सर्वाधिक दबाव वाले वैश्विक जोखिमों और उनकी उभरती प्रकृति का वसितृत वशिलेषण प्रसतुत किया गया है।

- रिपोर्ट में [जलवायु परविरतन](#), [तकनीकी प्रगत](#), [भू-राजनीतिक तनाव](#) और [सामाजिक ध्रुवीकरण](#) जैसे प्रमुख मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है तथा इन चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिये बहुपक्षीय समाधानों की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया गया है।

### वैश्विक जोखिम रिपोर्ट, 2025 क्या है?

#### परचयः

- वैश्विक जोखिम रिपोर्ट वर्ष 2006 में [आतंकवाद](#) और [एवयिन इनफ्लुएंजा](#) के प्रभुत्व वाले परदृश्य के दौरान लॉन्च की गई थी। पछिले दो दशकों में, [वर्ष 2007-2008 के वतितीय संकट](#), [कोविड-19](#) और संरचनात्मक शक्तियों ([तकनीकी प्रकषेपवकर](#), [भू-राजनीतिक बदलाव](#), [जलवायु परविरतन](#) और [जनसांख्यिकीय वभिजन](#)) जैसी प्रमुख घटनाओं ने वैश्विक जोखिम दृष्टिकोण को आकार दिया है।

#### जोखिम संबंधी धारणाओं में प्रमुख रुझानः

- परयावरणीय जोखिम दीर्घकालिक चिंताओं पर हावी हैं: [वरम मौसम की घटनाओं](#) के नेतृत्व में परयावरणीय जोखिम लगातार 10-वर्षीय जोखिम रैंकिंग में शीर्ष पर रहे हैं।
  - वर्ष 2009 से [प्रदूषण](#) एक गंभीर जोखिम के रूप में उभरा है, जो [जैवविधिता की हानि](#) और [पारसिथितिकी तंत्र](#) के पतन के साथ-साथ बढ़ रहा है, जो वर्ष 2009 में 37वें स्थान से बढ़कर वर्ष 2025 में दूसरे स्थान पर पहुँच गया है।
- संघर्ष के बारे में चरिस्थायी चिंताएँ: [राज्य-आधारित सशस्त्र संघर्ष](#) एक शीर्ष चिंता का वषिय बना हुआ है, [सीरियाई गृहयुद्ध](#) और [यूक्रेन पर रूसी आक्रमण](#) जैसी घटनाओं के दौरान रैंकिंग में वृद्धि हुई है।
- दीर्घकालिक चुनौतियों के रूप में सामाजिक जोखिमः [असमानता](#), [सामाजिक ध्रुवीकरण](#) और [मानवाधिकारों](#) का ह्रास जैसे जोखिम लगातार उच्च स्तर पर हैं।
  - [सामाजिक ध्रुवीकरण](#) वर्ष 2012 में 21वें स्थान से बढ़कर वर्ष 2025 में 8वें स्थान पर पहुँच गया, जो बढ़ते वभिजन को दर्शाता है।
- आर्थिक जोखिम को दीर्घकालिक रूप से कम महत्त्वपूर्ण माना जाता है: [मुद्रासफीत](#) और आर्थिक मंदी जैसे आर्थिक जोखिम निम्न स्तर पर हैं, केवल ऋण और एसेट बबल की प्रमुखता बनी हुई है।
- [तकनीकी जोखिम](#): तकनीकी जोखिम, जनिमें प्रतकिल कृत्रिम बुद्धिमत्ता परणाम और [साइबर वॉर](#) शामिल हैं, अत्यधिक अस्थिर हैं, जनिमें गलत सूचना जैसी उभरती हुई चिंताएँ, [नैनोटेकनोलॉजी](#) और व्यापक कंप्यूटिंग जैसे पूरव जोखिमों का स्थान ले रही हैं, जो तकनीकी परविरतन की तीव्र गति को उजागर करती हैं।



## वर्तमान और अल्पकालिक से मध्यम अवधि के जोखिम क्या हैं?

- **बढ़ता व्यापार संरक्षणवाद:** बढ़ते टैरिफि और संरक्षणवादी नीतियों के कारण वैश्विक व्यापार में उल्लेखनीय गिरावट आ रही है। **पश्चिम और पूर्व** के बीच व्यापार तनाव से आर्थिक वयोजन में और **अधिक वृद्धि होने का खतरा** है। वर्ष 2017 के बाद से विश्व भर में हानिकारक व्यापार नीति हस्तक्षेप में वृद्धि हुई है।
- **औद्योगिक नीतियाँ और गैर-टैरिफि बाधाएँ:** देश घरेलू उद्योगों की रक्षा के लिये **मुद्रास्फीति नियुनीकरण अधिनियम** और **मेक इन इंडिया** जैसी औद्योगिक नीतियों को तेज़ी से अपना रहे हैं, जिससे **भ्रष्टाचार** और संसाधनों के गलत आवंटन का खतरा बना रहता है। **राष्ट्रीय सुरक्षा** वर्गीकरण का वसतिार व्यापार और नविश को और अधिक अवरुद्ध कर सकता है।
- **व्यापार तनाव के आर्थिक जोखिम:** आर्थिक मंदी कई क्षेत्रों में शीर्ष वैश्विक जोखिम के रूप में है, टैरिफि के कारण अनिश्चिता बढ़ रही है, उत्पादकता कम हो रही है और नविश हतोत्साहित हो रहा है। वखिंडित व्यापार वातावरण ने 2023 में वैश्विक **प्रत्यक्ष वदिशी नविश** में 10% की गिरावट का योगदान दिया।
- **आर्थिक अनिश्चिता और वृद्धि:** जबकि वैश्विक मुद्रास्फीति 2025 तक घटकर 3.5% होने का अनुमान है, बढ़ते व्यापार प्रतिस्पर्द्धा से मुद्रास्फीति में फरि से वृद्धि हो सकती है तथा ऋण पुनर्वतित जोखिम बढ़ा सकते हैं। **अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)** ने वर्ष 2024-2025 के लिये प्रत्येक वर्ष 3.2% की स्थिर लेकिन धीमी वैश्विक वृद्धि का अनुमान लगाया है, जो महामारी से पहले के औसत से कम है।
- **गलत सूचना और भ्रामक सूचनाओं का बढ़ना:** **डजिटल प्लेटफॉर्म** और **AI-जनरेटेड कंटेंट** के बढ़ने से **गलत और भ्रामक सूचनाओं** का प्रचलन बढ़ गया है, जिससे सूचना और संस्थानों में भरोसा कम हुआ है। **सामाजिक ध्रुवीकरण (GRPS में रैंक 4)** इस मुद्दे को और बढ़ाता है, जिससे **एल्गोरदिम संबंधी पूर्वाग्रह** में वृद्धि होती है तथा झूठी सामग्री को सच से अलग करना कठिन हो जाता है।
  - गलत सूचना से तात्पर्य झूठी सूचना से है जो **धोखा देने के इरादे के बनिा फैलाई जाती है**, अक्सर इसलिये क्योंकि इसे साझा करने वाला व्यक्ति इसे सच मानता है।
  - इसके विपरीत, **दुष्प्रचार जानबूझकर फैलाई गई गलत सूचना है जो दूसरों को गुमराह करने या हेरफेर करने** के इरादे प्रसारित की जाती है।
- **एल्गोरदिमिक पूर्वाग्रह जोखिम:** एल्गोरदिमिक पूर्वाग्रह **तरुटपूरण डेटा, सामाजिक वभिाजन और मानवीय नरीक्षण** से उत्पन्न होते हैं, जिससे भरती, सार्वजनिक सेवाओं या पूरवानुमानित पुलसिगि जैसे नरिण्यों में असमानताएँ उत्पन्न होती हैं। राजनीतिक पूर्वाग्रह विशेष रूप से **एल्गोरदिम** में अंतरनहित होने का जोखिम रखते हैं, सामाजिक ध्रुवीकरण इन प्रभावों को गहरा करता है।
- **नागरिक नगरानी संबंधी चिंताएँ:** सरकारें और तकनीकी कंपनियाँ **नागरिकों** की नगरानी के लिये **AI, डेटा एनालिटिक्स** और डजिटल प्लेटफॉर्म का लाभ उठा रही हैं, अक्सर अपर्याप्त कानूनी सुरक्षा उपायों के साथ। जबकि यह डेटा सार्वजनिक सेवाओं को बेहतर बना सकता है, **यहुरुपयोग के जोखिम** भी उत्पन्न करता है, खासकर उन क्षेत्रों में जहाँ डेटा सुरक्षा नियम सीमित हैं।
  - मीडिया और सूचना स्रोतों पर लोगों का भरोसा घट रहा है, सर्वेक्षण किये गये 47 देशों में केवल 40% लोग ही अधिकांश समाचारों पर भरोसा करते हैं।
- **संसरशपि और नगरानी पर वैश्विक चिंताएँ:** संसरशपि और नगरानी (GRPS में रैंक 16) ऑनलाइन नगरानी और नयितरण की बढ़ती आशंकाओं को दर्शाती है। ये चिंताएँ **पूर्वी एशिया, लैटिन अमेरिका** और **मध्य एशिया** में सबसे ज्यादा स्पष्ट हैं, जहाँ समाजों और सरकारों के बीच वभिाजन गहरा संबंध रहा है।
- **तकनीकी शोषण और साइबर सुरक्षा जोखिम:** **AI और GAI** खतरे उत्पन्न करने वाले तत्वों और राज्य एजेंसियों को गलत सूचना अभियान का वसतिार करने, ऑनलाइन कमजोरियों का फायदा उठाने तथा **साइबर हमलों** के माध्यम से एल्गोरदिम से समझौता करने को संक्षम बनाते हैं, जिससे डजिटल प्रणालियों में वशिवास और कम होता है।

## दीर्घकालिक जोखिम क्या हैं?

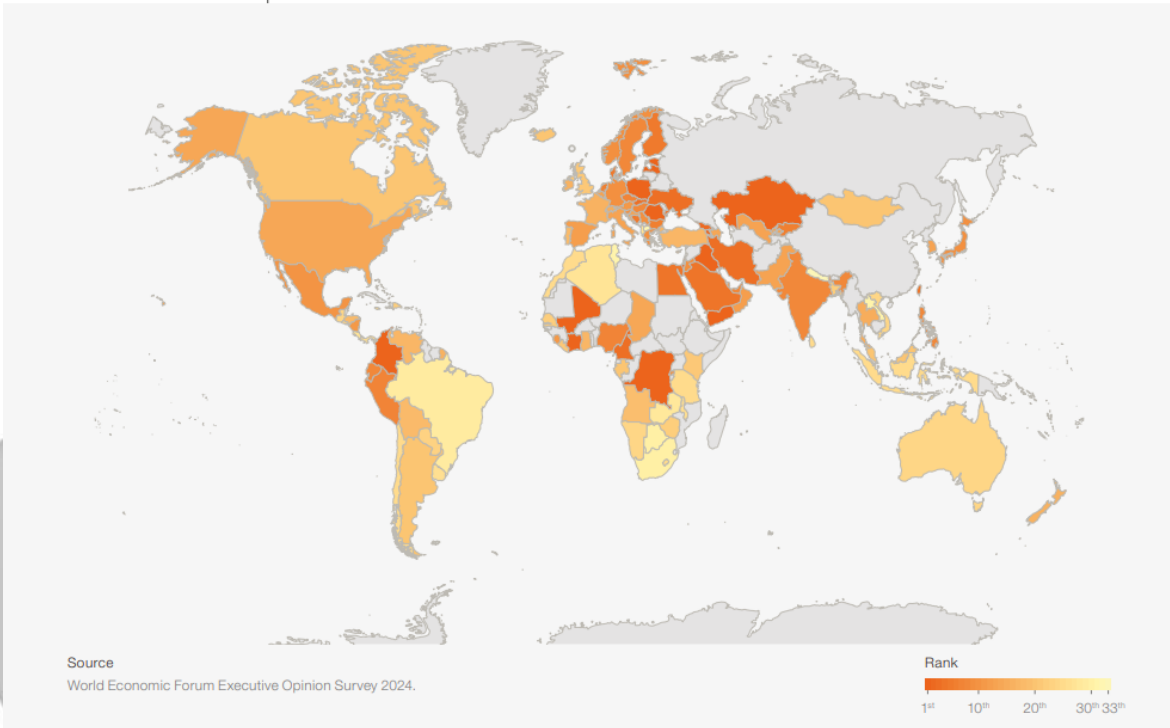
- **जोखिम परदृश्य में गिरावट:** वर्ष 2035 तक वैश्विक जोखिम की गंभीरता और अधिक खराब होने की आशंका है, तथा 62% उत्तरदाताओं ने अशांत या तूफानी परदृश्य का पूरवानुमान लगाया है।

- **जोखमिों को आकार देने वाली संरचनात्मक क्षमताएँ:** चार प्रमुख संरचनात्मक क्षमताएँ अर्थात् तकनीकी प्रक्षेपवक्र, भू-रणनीतिक बदलाव, जलवायु परिवर्तन और जनसांख्यिकीय विभाजन दीर्घकालिक वैश्विक जोखमिों को आकार प्रदान करते हैं।
  - ये क्षमताएँ परस्पर क्रिया करती हैं, जोखमि बढ़ाती हैं तथा अस्थिरता में योगदान देती हैं, जिससे **भू-राजनीतिक वखिंडन**, तीव्र तकनीकी परिवर्तन, **जलवायु व्यवधान** और **वृद्ध होती आबादी जैसी जनसांख्यिकीय चुनौतियाँ** उत्पन्न होती हैं।
- **उभरते जोखमि वषिय:** प्रमुख उभरते जोखमिों में **बायोटेक प्रगत शामलि है, जो चकितिसा संबंधी सफलताएँ प्रदान करती है**, लेकिन जैविक आतंकवाद या जीन संपादन दुरुघटनाओं जैसे दुरुपयोग के बारे में चिंताएँ भी बढ़ाती हैं। प्रदूषण, वशिष रूप से कम महमहत्त्व वाले प्रदूषक, स्वास्थ्य और पारस्थितिकी के लिये महत्त्वपूर्ण खतरा उत्पन्न करते हैं।
- **पर्यावरणीय जोखमिों की प्रभावता:** 10 वर्ष के परदृश्य में पर्यावरणीय जोखमिों की प्रभावता है, जिसमें **चरम मौसम की घटनाओं** को रैंक 1 पर रखा गया है, उसके बाद जैवविविधता ह्रास (रैंक 2), पृथ्वी तंत्र में गंभीर परिवर्तन (रैंक 3), प्राकृतिक संसाधनों का अभाव (रैंक 4) और प्रदूषण (रैंक 10) हैं। युवा उत्तरदाताओं और नागरिक समाज समूहों ने प्रदूषण को वशिष रूप से उच्च स्थान दिया है।
- **प्रौद्योगिकीय और सामाजिक जोखमि:** प्रौद्योगिकीय जोखमिों, जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता (रैंक 6) के प्रतिकूल परिणाम, के अत्यधिक बढ़ने की उम्मीद है। **असमानता** (रैंक 7) और सामाजिक ध्रुवीकरण (रैंक 8) सहित सामाजिक जोखमि से जापान और जर्मनी जैसे कालप्रभावित अर्थव्यवस्थाओं में **संभावित सामाजिक अस्थिरता** और **जनांकिकीय चुनौतियाँ** उत्पन्न हो सकती हैं।
- **भू-राजनीतिक जोखमि और आर्थिक स्थिरता:** भू-राजनीतिक जोखमि, हालाँकि अल्पवर्ध रैंकिंग में प्रमुख हैं, लेकिन दीर्घवर्ध परदृश्य में ये जोखमि शीर्ष 10 से बाहर हैं। हालाँकि, **राज्य-आधारित सशस्त्र संघर्ष** 12वें स्थान पर पहुँच गया है और जैविक, रासायनिक अथवा **परमाणु हथियारों** के जोखमि में वृद्धि हुई है। अपराध और वधि-वरिद्ध आर्थिक गतिविधियों के 15वें स्थान पर पहुँचने के साथ आर्थिक जोखमि अस्थिर बने हुए हैं।

FIGURE 1.11

**National risk perceptions: Armed conflict (interstate, intrastate, proxy wars, coups, etc.)**

Executive Opinion Survey rank of national risks from the question "Which five risks are the most likely to pose the biggest threat to your country in the next two years?"



- **गंभीर दीर्घकालिक जोखमि के रूप में प्रदूषण:** GRPS 10-वर्षीय परदृश्य में प्रदूषण 10वें स्थान पर है, तथा युवा उत्तरदाताओं ने इसे तीसरे स्थान पर रखा है। इससे, वशिष रूप से नमिन और मध्यम आय वाले देशों में, **स्वास्थ्य जोखमि**, **जैवविविधता ह्रास** और आर्थिक बोझ जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
  - उभरती हुई चिंताओं में **पेर- और पॉली-फ्लूरोएल्काइल पदार्थ (PFAS) ("फॉरएवर केमिकलस")** और **माइक्रोप्लास्टिकस** शामिल हैं, जिनमें से दोनों गंभीर स्वास्थ्य और पर्यावरणीय जोखमि उत्पन्न करते हैं।
- **जैवहथियार और जैवआतंकवाद संबंधी खतरे:** जैवप्रौद्योगिकी में हुई प्रगति से खतरे उत्पन्न करने वाले अभिकर्तताओं के लिये **जैविक एजेंट** बनाना अथवा उनमें परिवर्तन करना सरल हो गया है, जिससे संभावित रूप से महामारी अथवा लक्षित **जैविक हमले** हो सकते हैं। ए.आई.-संचालित साधनों की सुलभता और कम लागत से **जैवहथियार वकिसति कथि जाने के जोखमि बढ़ गए हैं**, जिसमें वशिषिट आनुवंशिक समूहों को लक्षित किया जाना भी शामिल है।
- **बायोटेक अनुप्रयोगों से स्वास्थ्य जोखमि:** हालाँकि बायोटेक से **जीन एडिटिंग** और ब्रेन-कंप्यूटर इंटरफेस जैसे **अभूतपूर्व समाधान प्राप्त हुए हैं कति इसके जोखमि भी हैं** जिनमें अवीकषित दीर्घकालिक स्वास्थ्य प्रभाव, नैदानिक जटिलताएँ और आकस्मिक अथवा इसका दुरुभावनापूर्ण दुरुपयोग शामिल है। **CRISPR-Cas9** जैसी तकनीकें, हालाँकि परिवर्तनकारी हैं, लेकिन लक्ष्य से परे इसके प्रभाव से आनुवंशिक पुनर्व्यवस्थापन अथवा अज्ञात पीढ़ीगत परिणाम हो सकते हैं।
- **तकनीकी अभिसरण और दुरुपयोग:** बायोटेक का ए.आई. के साथ एकीकरण सफलताओं और जोखमिों दोनों को बढ़ाता है। इसके उदाहरणों में ए.आई. मॉडल शामिल हैं जिनसे अनजाने में वषिकृत पदार्थ उत्पन्न हो सकते हैं और कंप्यूटर सस्टिम को हैक करने के लिये **DNA का उपयोग** किया जा



- सकता है। **जैविक और साइबर डोमेन** के अभिसरण से जटिल जोखिम उत्पन्न होंगे।
- **पेंशन संकट:** वे अर्थव्यवस्थाएँ जिनमें **कालप्रभावन की गति अत्यधिक** है, जहाँ **20% से अधिक जनसंख्या** 65 वर्ष से अधिक है, वहाँ **नरिभरता अनुपात** बढ़ता जा रहा है, तथा राज्य और नज्जी पेंशन प्रणालियों पर दबाव बढ़ रहा है।
    - परभाषति लाभ से अंशदान योजनाओं में परिवर्तन से व्यक्तिगत उत्तरदायित्व बढ़ जाता है, फरि भी कई लोगों के पास पर्याप्त बचत करने हेतु आवश्यक **वित्तीय साक्षरता** अथवा आय का अभाव होता है।
    - महिलाओं और नमिन आय वाले शर्मिकों का **पेंशन अंतराल और भी अधिक बढ़ गया है**, तथा प्रणालीगत असमानताएँ सेवानवित्त लोगों के लयि गरीबी के जोखिम को और भी बढ़ा रही हैं।
  - **शर्म और दीर्घकालिक देखभाल का अभाव:** सुपर-एजगि सोसायटी को शर्मिकों की अत्यधिक कमी का सामना करना पड़ेगा, वशिष रूप से **दीर्घकालिक देखभाल क्षेत्रों** में, जो अल्प वतितपोषति हैं और **अवैतनिक देखभालकरतताओं** अथवा **प्रवासी शर्मिकों** पर नरिभर हैं। आप्रवासन से सहायता मलित्ती है, लेकनि **आप्रवास वरिधी नीतियों** और महिला कार्यबल भागीदारी बढ़ाने हेतु सीमति सहायता से समस्य़ा के समाधान में बाधा उत्पन्न होती है। तकनीकी हस्तक्षेप सहायक हो सकते हैं लेकनि इनके माध्यम से देखभाल की सभी मांगों की पूरति नहीं की जा सकती।
  - **भवषिय में सुपर-एजगि जोखिम:** वर्तमान में युवा जनसंख्या वाले देश, वशिष रूप से **उप-सहारा अफरीका** में, **मानव पूंजी** अथवा सामाजिक सुरक्षा जाल में पर्याप्त नविश के बनिा समान जनसांख्यिकीय प्रक्षेपवकर का अनुसरण करने का जोखिम है। जब ये क्षेत्र अंततः अत्यधिक काल प्रभावति हो जाएंगे, तो इनके समकष **गरीबी, असमानता** और **अल्पवकिसति देखभाल प्रणालियों** की **जटिल चुनौतियों** हो सकती हैं।

## रपिर्ट में कौन सी सफिरशियों की गई हैं?

- **बहुपक्षवाद को बढ़ावा मलिनः** वैश्विक संधियों और समझौतों में भू-आर्थिक टकराव को हल करने की दीर्घकालिक क्षमता है। **वशिष व्यापार संगठन (WTO)** में सुधारों को बढ़ावा देना (वशिष रूप से वविाद समाधान, टैरफि और डजिटिल व्यापार के संदर्भ में) प्राथमकित्ता का क्षेत्र है।
- **घरेलू आर्थिक अनुकूलन को मज़बूत करना:** जैसे-जैसे व्यापार महंगा एवं अधिक जटिल होता जा रहा है, देशों को ऐसी नीतियों पर ध्यान केंद्रति करना चाहिये जसिसे घरेलू आर्थिक मज़बूती को बढ़ावा मलि। राष्ट्रीय अनुकूलन बढ़ाने के लयि ऊर्जा, **कृषि** एवं रक्षा जैसे रणनीतिक क्षेत्रों में आत्मनरिभरता हासलि करने के साथ-साथ वित्तीय क्षेत्र के वकिस **शिक्षा, स्वास्थ्य** और **बुनयादी ढाँचे** में नविश महत्त्वपूर्ण है।
- **कार्रवाई की तत्काल आवश्यकता: प्रदूषण** और स्वास्थ्य, पारसिथितिकी तंत्र एवं अर्थव्यवस्थाओं पर इसके प्रभावों से नपिटने के लयि व्यापक नीतियों, **अनुकूली रणनीतियों, सख्त नयिमाँ, उभरते प्रदूषकों के एकीकरण** एवं उद्योगों और वभिन्नि क्षेत्रों में धारणीय प्रथाओं को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।
  - **नगिरानी, रपिर्टगि और मूल्यांकन (MRE) प्रणालियों में सुधार:** **MRE प्रणालियों** को बेहतर बनाने से **कार्रवाई योग्य अंतरदृष्टि** मलि सकती है जसिसे लक्षति हस्तक्षेप होने से प्रदूषण प्रबंधन अधिक प्रभावी एवं पारदर्शी हो सकता है।
  - **उचति वतितपोषण प्राप्त करना:** प्रदूषण संबंधी पहलों को पर्याप्त वतितपोषण नहीं मलि पाया है तथा वर्ष 2015 से 2021 के बीच वायु प्रदूषण नविरण हेतु अंतरराष्ट्रीय वकिस वतितपोषण का 1% से भी कम दया गया है।
- **जवाबदेहति और वनियिमन की मांग: एलगोरदिम संबंधी पूर्वाग्रह को कम करने,** नरिणय नरिमाण में जवाबदेहति सुनशिचति करने तथा **व्यक्तगत गोपनीयता एवं वशिवास की रक्षा** हेतु ज़मिमेदार नगिरानी के लयि **वैश्विक मानकों को स्थापति** करने के क्रम में स्पष्ट रूपरेखा की तत्काल आवश्यकता है।
- **नैतिक और वनियिमक नरिीक्षण पर बल:** स्पष्ट नैतिक सीमाओं एवं मज़बूत वैश्विक वनियिमनों के बनिा, **बायोटेक के दुरुपयोग** से स्वास्थ्य, सामाजिक एवं भू-राजनीतिक क्षेत्र में नकारात्मक परणाम हो सकते हैं। जोखिम न्यूनीकरण के साथ नवाचार को संतुलति करने और प्रगततिक समान पहुँच सुनशिचति करने के क्रम में **व्यापक शासन ढाँचे** की आवश्यकता है।
  - **नैतिकता और जैव प्रौद्योगिकी** के वशिषज्जों से बना एक वैश्विक नैतिक नरिीक्षण नकिय, मानकों का पालन सुनशिचति करने के साथ तीव्र प्रगतति में सहायता कर सकता है। **मानव जीनोम एडिटिग** के लयि **वशिष स्वास्थ्य संगठन (WHO) की सफिरशियों** जैसे ढाँचे में प्रगतति से व्यापक वैश्विक सहयोग में सहायता मलित्ती है।
- **नीतगत एवं संरचनात्मक सुधार: सेवानवित्त की आयु** बढ़ाने और **पेंशन में सुधार के लयि अंतर-पीढीगत तनाव** से बचने के क्रम में सावधानीपूर्वक नीतगत संतुलन की आवश्यकता है।
- **अनुकूल कार्य नीतियों को प्रोत्साहति करना:** संगठनों को अनुकूल कार्य व्यवस्था को अपनाना चाहिये, जसिसे **कर्मचारियों को बेहतर कॅरियर पथ** अपनाने में सहायता मलि सके। इसमें **देखभाल, शिक्षा या कौशल** जैसे आयाम शामिल हैं जसिसे अधिक अनुकूल और समावेशी कार्यबल को समर्थन मलित्ती है।
- **सेवानवित्त पूर्व स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देना:** सरकारों और नज्जी क्षेत्रों को व्यायाम, पोषण और सामाजिक संपर्कों पर ध्यान केंद्रति करते हुए **सेवानवित्त पूर्व स्वास्थ्य वकिलपों** को बेहतर बनाने के लयि पहल शुरू करनी चाहिये। **सगिापुर के "स्वास्थ्य ज़लि"** जैसे **उदाहरण** इस बात पर प्रकाश डालते हैं किकिसि प्रकार स्वस्थ आदतों को बढ़ावा देने से दीर्घकालिक देखभाल की ज़रूरतें कम हो सकती हैं, अर्थव्यवस्थाएँ मज़बूत हो सकती हैं तथा वित्तीय दबाव कम हो सकते हैं।